3. सही मशीन का उपयोग:

मशीन के वेक्यूम को सही स्तर पर सेट करें।
मशीन लगाते समय स्तन को चोट न पहुंचे।

4. दूध संग्रह:

मशीन से निकलते ही दूध को ठंडा करें।
दूषित होने से बचाने के लिए तुरंत ढक दें।

दूध को सुरक्षित रखने के उपाय

1. दूध को तुरंत ठंडा करें ($4^{\circ}C$ पर)।
2. दूध को खुले में न रखें।
3. दूध को जमा करने के लिए साफ स्टील के बर्तन का उपयोग करें।
4. किसी भी प्रकार की गंध या रंग बदलने पर दूध न बेचें।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के लाभ

- दूध लंबे समय तक सुरक्षित रहता है।
- उपभोक्ताओं में विश्वास बढ़ता है।
- पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है।
- किसानों की आय में वृद्धि होती है।

सुझाव और चेतावनी

- दोहन से पहले और बाद में हाथों को धोएं।
- बीमार पशु का दूध अलग करें।
- दूध को सीधे धूप में न रखें।
- गोशाला और उपकरण नियमित रूप से साफ करें।

निष्कर्ष

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन और सही दोहन तकनीक अपनाने से न केवल दूध की गुणवत्ता और पोषण बनाए रहता है, बल्कि पशुओं की सेहत और किसान की आय भी बढ़ती है। नियमित सफाई, संतुलित आहार, रोग नियंत्रण और सुरक्षित संग्रह जैसी सावधानियां अपनाकर हम स्वास्थ्यवर्धक और रोग मुक्त दूध सुनिश्चित कर सकते हैं। यह न केवल किसानों के लिए लाभकारी है, बल्कि उपभोक्ताओं के लिए भी सुरक्षित और पौष्टिक दूध उपलब्ध कराता है।

संपादक:

उमेश सिंह, अधिष्ठाता, संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान
योगेन्द्र सिंह जादौन, सह–प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

प्रकाशक:

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग
संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/01/2026/DEXT/ SGIDT/BASU-Patna

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं दोहन की विधियाँ

योगेन्द्र सिंह जादौन, अरविंद कुमार ठाकुर,
राकेश कुमार एवं अनुराधा कुमारी

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग
संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं दुग्ध दोहन की विधियाँ

दूध हमारे देश के पोषण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छे स्वास्थ्य और आर्थिक लाभ के लिए यह आवश्यक है कि दूध स्वच्छ और सुरक्षित तरीके से उत्पादित किया जाए। स्वच्छ दुग्ध उत्पादन न केवल दूध की गुणवत्ता और पोषण बनाए रखता है, बल्कि पशुओं और उपभोक्ताओं को होने वाले रोगों से भी बचाता है। दूध उत्पादन और दुग्ध दोहन के स्वच्छ तरीकों, उपकरणों की सफाई, और दूध के सुरक्षित भंडारण के उपायों को सरल और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन का उद्देश्य:

दूध की गुणवत्ता और पोषण बनाए रखना।
दुग्धजन्य रोगों जैसे ट्युबरकुलोसिस और ब्रुसेलोसिस से सुरक्षा।
बाजार में दूध का मूल्य बढ़ाना।
रोग रहित, ताजा और स्वादिष्ट दूध।
पशुओं की सेहत में सुधार।
दूध को लंबा समय तक संरक्षित रखा जा सकता है।

पशु स्वास्थ्य और देखभाल

स्वच्छ वातावरण:

गोशाला को साफ और सूखा रखें।
गंदगी, कीड़े और पानी जमा न होने दें।

2. संतुलित आहार:

पर्याप्त पोषण वाला चारा और हरा चारा।
खनिज और विटामिन युक्त आहार।

3. नियमित टीकाकरण और उपचार:

टीकाकरण (जैसे FMD, HS, BQ आदि) समय पर करें।
संक्रमण या रोग की स्थिति में तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श।

4. पशु का स्वच्छता रखरखाव:

दैनिक रूप से पशु को स्नान कराना।
पंख, बाल और पूँछ साफ रखें।

दुग्ध उत्पादन के लिए स्वच्छता के उपाय

1. दुग्ध स्थल की सफाई:

दूध दोहन से पहले गोशाला और दोहनी जगह को धोएं।
फर्श, दीवार और उपकरणों को साफ रखें।

2. दुग्धन उपकरणों की सफाई:

बाल्टी, डिब्बे, नल, और अन्य उपकरण को उबालकर या अच्छे कीटाणुनाशक से धोएं।
प्लास्टिक की बजाय स्टील के बर्तन इस्तेमाल करें।

3. दूध को दूषित होने से बचाएं:

दूध तुरंत ठंडा करके संग्रह करें।
खुले वातावरण में दूध न रखें।
हाथ और कपड़े साफ रखें।

दुग्ध दोहन की विधियाँ

A. हाथ से दोहन

1. साफ हाथ:

हाथ अच्छी तरह धोएं और अगर संभव हो तो सैनिटाइज करें।

2. स्तन की सफाई:

हल्के गरम पानी और साबुन से स्टन की सफाई करें।
सूखी और साफ कपड़े से पोछें।

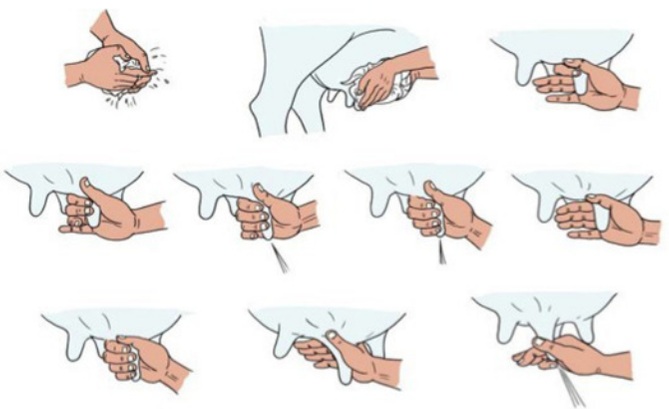

3. दोहनी मुद्रा:

बैठकर या घुटने टेककर दुग्ध दोहें।
सभी अंगुलियों से धीरे-धीरे दूध दोहें।

4. दूध संग्रह:

साफ बर्तन में दूध इकट्ठा करें।
दोहन के बाद बर्तन ढककर रखें।

B. मशीन द्वारा दोहन

1. मशीन की सफाई:

इस्तेमाल से पहले मशीन के हिस्सों को धोएं और कीटाणुरहित करें।

2. पशु को तैयार करना:

स्तनों की सफाई और हल्का मालिश करें।

बचाने के लिए नियमित रूप से साफ करें।

आहार

1. हरे चारे में पानी की मात्रा अधिक हो सकती है, इसलिए ध्यान रखें कि भोजन जल्दी खराब न हो।
2. वर्षा ऋतु में कवक और बैक्टीरिया संक्रमण का खतरा होता है, इसलिए चारा और पानी साफ रखें।

स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण

1.वर्षा ऋतु में पाचन रोग, त्वचा रोग और पैरों के संक्रमण का खतरा अधिक रहता है।
2.पशुओं के पैरों को हमेशा साफ और सूखा रखें।
3.टीकाकरण और दवा का पालन नियमित करें।

सुरक्षा उपाय

1. बिजली गिरने और ओलावृष्टि से बचाव के लिए गोशाला सुरक्षित जगह पर हो।
2. चराई के दौरान पानी जमने और कीड़ों से बचाने के लिए ध्यान रखें।

4. सामान्य प्रबंधन सुझाव

1. हर ऋतु में पशुओं के लिए साफ और पर्याप्त पानी।
2. समय–समय पर टीकाकरण और स्वास्थ्य जांच।
3. गोशाला और उपकरणों की नियमित सफाई।
4. पशुओं के वजन, दूध उत्पादन और व्यवहार की निगरानी।
5. पशु तनाव और बीमारी के संकेत पर तुरंत कार्यवाही।

निष्कर्ष

गर्मी, सर्दी और वर्षा ऋतु में पशुओं का उचित प्रबंधन उनके स्वास्थ्य, उत्पादन और प्रजनन क्षमता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक ऋतु में आवास, आहार, पानी और रोग नियंत्रण के विशेष उपाय अपनाकर हम पशुओं को स्वस्थ, खुशहाल और उत्पादक बनाए रख सकते हैं। किसानों के लिए यह न केवल लाभकारी है बल्कि पशुओं के लंबे जीवन और अच्छे उत्पादन के लिए भी आवश्यक है।

संपादक:

उमेश सिंह, अधिष्ठाता, संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

योगेन्द्र सिंह जादौन, सह–प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

प्रकाशक:

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/02/2026/DEXT/ SGIDT/BASU-Patna

गर्मी, सर्दी एवं वर्षा ऋतु में पशु प्रबंधन

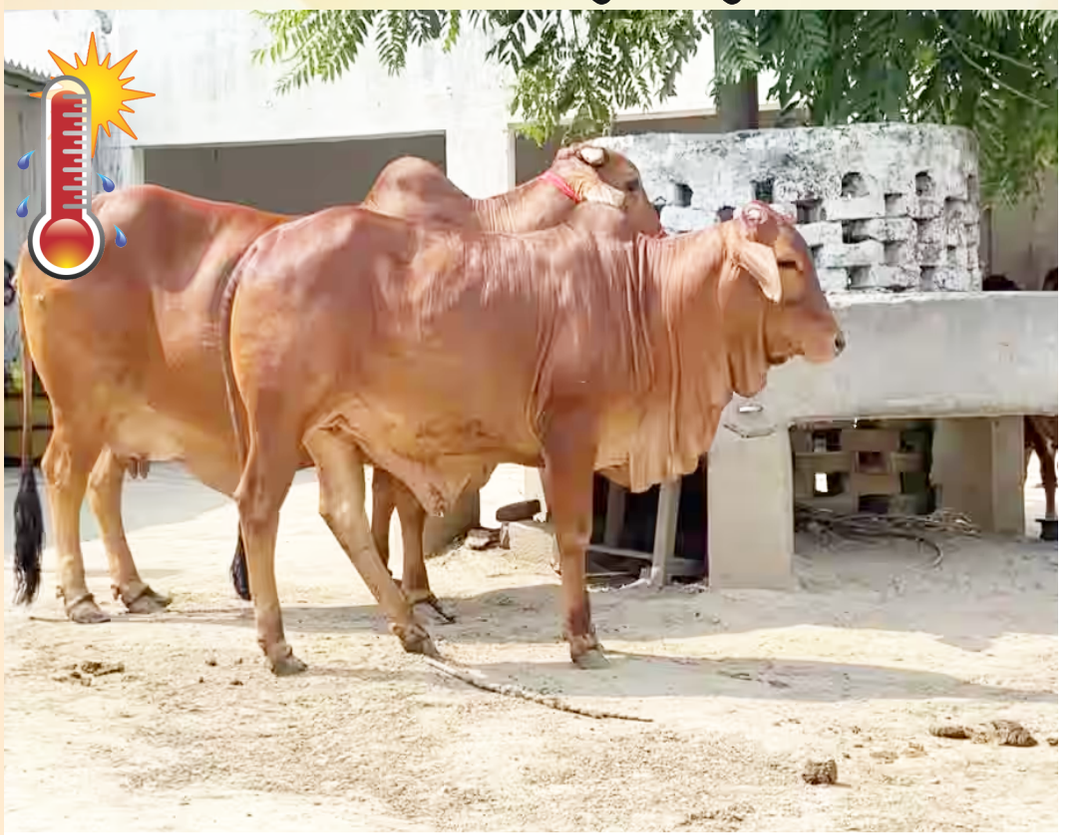

योगेन्द्र सिंह जादौन, अरविंद कुमार ठाकुर,

राकेश कुमार एवं विनीता रानी

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

गर्मी, सर्दी एवं वर्षा ऋतु में पशु प्रबंधन

परिचय

पशु पालन में ऋतु अनुसार प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। गर्मी, सर्दी और वर्षा ऋतु में पशुओं की स्वास्थ्य स्थिति, उत्पादन क्षमता और प्रजनन क्षमता प्रभावित हो सकती है। प्रत्येक मौसम में विशेष देखभाल, आहार और आवास की आवश्यकता होती है। इस मार्गदर्शन का उद्देश्य किसानों को सरल और व्यावहारिक तरीके से यह जानकारी देना है कि किस प्रकार वे अपने पशुओं को हर ऋतु में स्वस्थ, सुरक्षित और उत्पादक बनाए रख सकते हैं।

1. गर्मी ऋतु में पशु प्रबंधन

पानी और हाइड्रेशन

1. पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ और ताजा पानी उपलब्ध कराएं।
2. पानी को दिन में बार-बार बदलें और इसे खुले में नहीं रखें।
3. आवश्यकता पड़ने पर पानी में थोड़ा नमक मिलाया जा सकता है, ताकि इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बना रहे।

आहार

1. हरा चारा अधिक दें क्योंकि गर्मी में भूख कम हो सकती है।
2. फूस या सूखा चारा शाम को दें ताकि पशु दिन के समय ठंडक महसूस करें।
3. पोषक तत्व और विटामिन युक्त आहार (जैसे विटामिन A और E) शामिल करें।

आवास

1. गोशाला को हवादार और छायादार बनाएं।
2. दिन के समय धूप से बचाने के लिए झोपड़ी पर पंखा या छाया का प्रबंध करें।
3. फर्श को साफ और सूखा रखें, ताकि गर्मी में पशुओं को असुविधा न हो।

स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण

1.गर्मी में हीट स्ट्रोक से बचाव के लिए पशुओं की निगरानी करें।
2.मच्छरों और कीड़ों से बचाने के लिए नियमित रूप से गोशाला में धूप या कीटनाशक का छिड़काव करें।
3.गर्मी में पाचन संबंधी रोगों का खतरा अधिक होता है, इसलिए आहार संतुलित रखें।

2. सर्दी ऋतु में पशु प्रबंधन

आवास

1. गोशाला में ठंड से बचाव के लिए पर्याप्त बाड़, कम्बल या भूसा का उपयोग करें।
2. फर्श को नम या गीला न होने दें।
3. ठंडे हवाओं से बचाने के लिए गोशाला के दरवाजे और खिड़कियों को नियंत्रित करें।

आहार

1. सर्दी में पशुओं की ऊर्जा की आवश्यकता अधिक होती है, इसलिए उच्च कैलोरी वाला चारा दें।
2. हरा चारा, भूसा, अनाज और विटामिन-खनिज युक्त आहार शामिल करें।
3. सुबह और शाम पशुओं को पौष्टिक आहार देने की आदत डालें।

पानी

1. पानी जमने से बचाने के लिए गर्म पानी उपलब्ध कराएं।
2. पानी के बर्तन और टैंक नियमित रूप से साफ करें।

स्वास्थ्य

1. सर्दी में श्वसन संबंधी रोगों का खतरा अधिक होता है, इसलिए पशुओं की निगरानी करें।
2. टीकाकरण और डिटिक्शन टेस्ट समय पर करें।
3. बीमार पशु को अलग रखें और तुरंत उपचार करवाएं।

3. वर्षा ऋतु में पशु प्रबंधन

आवास और स्वच्छता

1. गोशाला का फर्श और छत पूरी तरह से जलरोधी और सूखा रखें।
2. वर्षा के पानी से बचाने के लिए उचित निकासी की व्यवस्था करें।
3. गोशाला को कीड़े, मच्छर और बैक्टीरिया से

- शरीर में खनिज संतुलन बनाए रखता है।

6. स्वच्छ पानी

- दूध का लगभग 87 प्रतिशत भाग पानी होता है।
- दुधारू पशु को प्रतिदिन 60–80 लीटर पानी की

ध्यान रखें:

- पानी साफ और ताजा हो।
- दिन में 3–4 बार पानी पिलाएं।

संतुलित आहार देने के लाभ

- दूध उत्पादन में 15–30 प्रतिशत तक वृद्धि।
- पशु लंबे समय तक दूध देते हैं।
- रोगों की संभावना कम होती है।
- पशु स्वस्थ और सक्रिय रहते हैं।
- दवाइयों पर खर्च कम होता है।
- किसान की आय में बढ़ोतरी होती है।

किसानों के लिए उपयोगी सुझाव

- केवल भूसा खिलाना पर्याप्त नहीं है।
- दूध उत्पादन के अनुसार दाना दें।
- हरा व सूखा चारा दोनों शामिल करें।
- खनिज मिश्रण और नमक रोज दें।
- आहार में अचानक बदलाव न करें।
- समय-समय पर पशु चिकित्सक से सलाह लें।

निष्कर्ष

डेयरी पशुओं से अधिक दूध और बेहतर लाभ प्राप्त करने के लिए संतुलित आहार का विशेष महत्व है। उचित मात्रा में हरा चारा, सूखा चारा, दाना, खनिज मिश्रण और स्वच्छ पानी देने से पशु स्वस्थ रहते हैं और उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ती है। संतुलित आहार अपनाकर किसान अपने डेयरी व्यवसाय को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बना सकते हैं।

संपादक:

उमेश सिंह, अधिष्ठाता, संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

योगेन्द्र सिंह जादौन, सह-प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

प्रकाशक:

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/03/2026/DEXT/ SGIDT/BASU-Patna

डेयरी पशुओं के लिए संतुलित आहार का महत्व

योगेन्द्र सिंह जादौन, अरविंद कुमार ठाकुर,

राकेश कुमार एवं बिनीता रानी

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

डेयरी पशुओं के लिए संतुलित आहार का महत्व

परिचय

डेयरी व्यवसाय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है। दूध उत्पादन, पशु का स्वास्थ्य और किसान की आय –तीनों का सीधा संबंध पशु को मिलने वाले आहार से होता है। यदि पशु को असंतुलित या अपर्याप्त भोजन दिया जाए तो दूध उत्पादन घट जाता है, पशु कमजोर हो जाते हैं तथा बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए डेयरी पशुओं को उनकी आवश्यकता के अनुसार सभी पोषक तत्वों से युक्त संतुलित आहार देना अत्यंत आवश्यक है।

संतुलित आहार क्या है?

संतुलित आहार वह आहार होता है जिसमें पशु की आयु, वजन, शारीरिक अवस्था और दूध उत्पादन की आवश्यकता के अनुसार सभी आवश्यक पोषक तत्व उचित मात्रा में उपलब्ध हों। इसमें ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज लवण, विटामिन तथा स्वच्छ पानी शामिल होते हैं। संतुलित आहार देने से पशु स्वस्थ रहते हैं, दूध उत्पादन बढ़ता है और रोगों की संभावना कम होती है।

संतुलित आहार के मुख्य घटक

1. ऊर्जा देने वाले तत्व

- मक्का
- जौ
- बाजरा
- गेहूं का चोकर
- चावल की भूसी

लाभ:

- पशु को शक्ति मिलती है
- शरीर का तापमान बना रहता है
- दूध उत्पादन में वृद्धि होती है

2. प्रोटीन स्रोत

- सरसों खली
- मूंगफली खली
- सोयाबीन खली
- अरहर चूनी

लाभ:

- दूध की मात्रा व गुणवत्ता बढ़ती है
- पशु की वृद्धि अच्छी होती है
- प्रजनन क्षमता में सुधार होता है

3. हरा चारा

- बरसीम
- लूसर्न
- ज्वार
- मक्का
- नेपियर घास

लाभ:

- पाचन क्रिया अच्छी रहती है।
- विटामिन की पूर्ति होती है।
- पशु स्वस्थ और सक्रिय रहते हैं।

खनिज, विटामिन एवं पानी का महत्व

4. खनिज मिश्रण

- कैल्शियम
- फॉस्फोरस
- जिंक
- कॉपर
- आयरन

महत्व:

- हड्डियां मजबूत बनती हैं।
- दूध में फैट प्रतिशत बढ़ता है।
- बांझपन की समस्या कम होती है।
- पशु जल्दी हीट में आते हैं।
- प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण देना आवश्यक है।

5. सामान्य नमक

- भूख बढ़ाता है।
- पाचन क्रिया में सहायक।

- गलघोंटू (HS)
- ब्लैक क्वार्टर (BQ)
- ब्रुसेलोसिस (जहां आवश्यक)

लाभ:

- रोगों से सुरक्षा।
- मृत्यु दर में कमी।
- दूध उत्पादन सुरक्षित।

6. बाहरी लोगों एवं वाहनों का नियंत्रण

- अनावश्यक लोगों का प्रवेश रोकें।
- पशुशाला के बाहर ही जूते–चप्पल बदलवाएं।
- वाहनों का कीटाणुनाशन कराएं।

अन्य महत्वपूर्ण जैव–सुरक्षा उपाय

7. चारा एवं पानी की सुरक्षा

- सड़ा–गला चारा न खिलाएं।
- चारा रखने की जगह साफ रखें।
- पानी स्वच्छ एवं ताजा हो।

8. मृत पशु का सुरक्षित निस्तारण

- मृत पशु को खुले में न छोड़ें।
- गड्ढे में गहराई से दबाएं।
- चूना डालकर मिट्टी से ढकें।

9. कीट, चूहे व मक्खी नियंत्रण

- नियमित दवा छिड़काव करें।
- गंदगी जमा न होने दें।
- मक्खी–मच्छर नियंत्रण जरूरी।

निष्कर्ष

डेयरी पशुओं को बीमारियों से बचाने के लिए जैव–सुरक्षा उपाय अपनाना अत्यंत आवश्यक है। स्वच्छता, टीकाकरण, बीमार पशुओं को अलग रखना तथा फार्म में नियंत्रित प्रवेश जैसे सरल उपाय अपनाकर रोगों के फैलाव को रोका जा सकता है। जैव–सुरक्षा न केवल पशुओं को स्वस्थ रखती है बल्कि दूध उत्पादन बढ़ाकर किसानों की आय को सुरक्षित और स्थायी बनाती है।

संपादक:

उमेश सिंह, अधिष्ठाता, संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

योगेन्द्र सिंह जादौन, सह–प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

प्रकाशक:

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/04/2026/DEXT/ SGIDT/BASU-Patna

डेयरी पशुओं में जैव–सुरक्षा के उपाय

योगेन्द्र सिंह जादौन, अरविंद कुमार ठाकुर

एवं राकेश कुमार

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

डेयरी पशुओं में जैव–सुरक्षा उपाय

डेयरी पशुओं में होने वाली संक्रामक बीमारियाँ जैसे खुरपका–मुंहपका, गलघोंटू, थनैला रोग आदि तेजी से फैलती हैं और इससे दूध उत्पादन घटने के साथ–साथ भारी आर्थिक नुकसान होता है। इन बीमारियों को रोकने का सबसे प्रभावी तरीका जैव–सुरक्षा (Bio&security) है। जैव–सुरक्षा उपाय अपनाकर रोगों के प्रवेश, फैलाव और पुनः संक्रमण को रोका जा सकता है, जिससे पशु स्वस्थ रहते हैं और डेयरी व्यवसाय सुरक्षित बना रहता है।

जैव–सुरक्षा क्या है?

जैव–सुरक्षा ऐसे सभी उपायों और व्यवस्थाओं का समूह है जिनका उद्देश्य डेयरी पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाना होता है। इसके अंतर्गत रोगों के फार्म में प्रवेश

को रोकना, उनके फैलाव को नियंत्रित करना तथा पुनः संक्रमण से बचाव करना शामिल है। उचित स्वच्छता, टीकाकरण, बीमार पशुओं को अलग रखना और नियंत्रित आवागमन जैसे जैव–सुरक्षा उपाय अपनाकर पशुओं को स्वस्थ रखा जा सकता है और डेयरी व्यवसाय को होने वाले आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकता है।

जैव–सुरक्षा के तीन मुख्य उद्देश्य हैं:

- रोग को फार्म में आने से रोकना।
- रोग को फैलने से रोकना।
- रोग को दोबारा फैलने से बचाना।

फार्म स्तर पर जैव–सुरक्षा उपाय

1. पशु आवास की स्वच्छता

- पशुशाला को प्रतिदिन साफ करें।
- गोबर व मूत्र का उचित निस्तारण करें।
- फर्श सूखी व हवादार रखें।
- कीचड़ व जलभराव न होने दें।

2. नियमित सफाई एवं कीटाणुनाशक

- सप्ताह में 1–2 बार कीटाणुनाशक का छिड़काव करें।
- फिनाइल, ब्लीचिंग पाउडर या पशु–अनुशंसित दवाओं का प्रयोग करें।
- दूध दुहने के स्थान को अलग व साफ रखें।

3. नए पशुओं का प्रबंधन

- नया पशु सीधे झुंड में न मिलाएं।
- 15–21 दिन अलग (क्वारंटाइन) रखें।
- पशु चिकित्सक से जांच कराएं।
- बीमार पशु कभी न खरीदें।

रोग नियंत्रण से संबंधित जैव–सुरक्षा उपाय

4. बीमार पशुओं को अलग रखना

- बीमार पशु को तुरंत अलग करें।
- अलग बर्तन व रस्सी का उपयोग करें।
- स्वस्थ पशुओं से संपर्क न होने दें।

5. टीकाकरण कार्यक्रम

- समय पर सभी आवश्यक टीके लगवाएं
- खुरपका–मुंहपका (FMD)

- फर्श सूखी और साफ रखें।
- गोबर तुरंत हटाएं।
- मक्खी नियंत्रण करें।

थनैला रोग का नियंत्रण

1 बीमार पशु का प्रबंधन

- संक्रमित पशु को अलग रखें।
- अंत में उसी पशु की दुहाई करें।
- अलग बर्तन व कपड़ा प्रयोग करें।

2 पशु चिकित्सकीय उपचार

- तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- बिना सलाह दवा न डालें।
- पूरा उपचार कोर्स करें।

3 दूध का उपयोग

- थनैला ग्रस्त दूध न बेचें।
- बछड़े को भी न पिलाएं।
- दवा अवधि तक दूध न उपयोग करें।

निष्कर्ष

थनैला रोग डेयरी पशुओं में पाया जाने वाला एक गंभीर रोग है, लेकिन उचित सावधानी अपनाकर इससे बचाव संभव है। यदि दुहाई स्वच्छ तरीके से की जाए, पशुशाला साफ रखी जाए तथा रोग की समय पर पहचान कर सही उपचार कराया जाए, तो इससे होने वाले आर्थिक नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। नियमित रूप से रोकथाम के उपाय अपनाने से पशु स्वस्थ रहते हैं, दूध की गुणवत्ता एवं मात्रा बनी रहती है और डेयरी व्यवसाय अधिक सुरक्षित व लाभकारी बनता है।

संपादक:

उमेश सिंह, अधिष्ठाता, संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

योगेन्द्र सिंह जादौन, सह–प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

प्रकाशक:

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder: PN/05/2026/DEXT/SGIDT/BASU-Patna

थनैला रोग की रोकथाम एवं नियंत्रण

योगेन्द्र सिंह जादौन, अरविंद कुमार ठाकुर

एवं राकेश कुमार

गव्य प्रसार शिक्षा विभाग

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

थनैला रोग की रोकथाम एवं नियंत्रण

थनैला रोग (Mastitis) डेयरी पशुओं में होने वाला एक गंभीर रोग है, जो मुख्य रूप से थन में संक्रमण के कारण होता है। यह रोग दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करता है तथा किसानों को भारी आर्थिक नुकसान पहुंचाता है। थनैला रोग के कारण दूध उत्पादन घट जाता है, दूध फट जाता है और कभी–कभी थन स्थायी रूप से खराब भी हो सकता है। समय पर पहचान, उचित

प्रबंधन और स्वच्छता अपनाकर इस रोग की रोकथाम एवं नियंत्रण संभव है।

थनैला रोग क्या है?

थनैला रोग द्धडेंजपजपेक्ष डेयरी पशुओं में होने वाला एक संक्रामक रोग है, जिसमें थन की दुग्ध ग्रंथियों में बैक्टीरिया के संक्रमण के कारण सूजन आ जाती है। इस रोग में दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों प्रभावित होती हैं तथा दूध में थक्के, पानीपन या फटने जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। थनैला रोग दुधारू पशुओं में अधिक पाया जाता है और यदि समय पर उपचार न किया जाए तो थन स्थायी रूप से खराब हो सकता है, जिससे किसान को भारी आर्थिक नुकसान होता है।

थनैला रोग के प्रकार

- क्लिनिकल थनैला – स्पष्ट लक्षण दिखाई देते हैं।
- सब–क्लिनिकल थनैला – लक्षण नहीं दिखते, पर दूध उत्पादन घटता है।

थनैला रोग के लक्षण

पशु में दिखाई देने वाले लक्षण

- थन में सूजन, गर्माहट और दर्द।
- थन सख्त हो जाना।
- दूध निकालते समय पशु को दर्द होना।
- बुखार आना, भूख कम लगना।

दूध में परिवर्तन

- दूध में पानी जैसा पतलापन।
- दूध में थक्के या गांठें।
- दूध फटना।
- बदबू आना।

थनैला रोग फैलने के कारण

- गंदे हाथों से दूध दुहना।
- गंदी थनैला मशीन।
- गीली और गंदी पशुशाला।
- घायल या फटे थन।
- बीमार पशु से संपर्क।

थनैला रोग की रोकथाम के उपाय

1 दुहाई से पहले सावधानियाँ

- हाथ साबुन से धोकर दुहाई करें।
- थन को गुनगुने पानी से साफ करें।
- अलग कपड़े से थन पोंछें।
- पहले कुछ धार दूध अलग निकालें।

2 दुहाई के समय

- पूरा दूध एक बार में निकालें।
- जोर से या झटके से दूध न निकालें।
- नाखून कटे हुए हों।

3 दुहाई के बाद

- थन डिपिंग द्धआयोडीन घोलक्ष करें।
- थन को गंदगी से बचाएं।

4 पशुशाला प्रबंधन

थन का सूजन

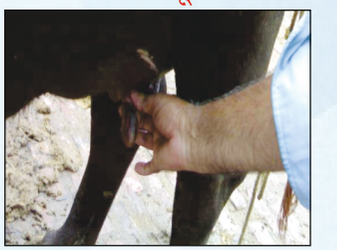

थन का कड़ा होना

थन का सख्त होना

दूध के रंग तथा घनत्व में परिवर्तन